

॥ श्री गंगा चालीसा ॥

□ Shri Ganga Chalisa □

॥ दोहा ॥

जय जय जय जग पावनी, जयति देवसरि गंग ।
जय शिव जटा निवासिनी, अनुपम तुंग तरंग ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जननी हराना अघखानी । आनंद करनी गंगा महारानी ॥
जय भगीरथी सुरसरि माता । कलिमल मूल डालिनी विख्याता ॥

जय जय जहानु सुता अघ हनानी । भीष्म की माता जगा जननी ॥
धवल कमल दल मम तनु सजे । लखी शत शरद चंद्र छवि लजाई ॥

वहां मकर विमल शुची सोहें । अमिया कलश कर लखी मन मोहें ॥
जदिता रत्ना कंचन आभूषण । हिय मणि हर, हरानितम दूषण ॥

जग पावनी त्रय ताप नासवनी । तरल तरंग तुंग मन भावनी ॥
जो गणपति अति पूज्य प्रधान । इहूं ते प्रथम गंगा अस्नाना ॥
ब्रह्मा कमंडल वासिनी देवी । श्री प्रभु पद पंकज सुख सेवि ॥

साथी सहस्र सागर सुत तरयो । गंगा सागर तीरथ धरयो ॥
अगम तरंग उठयो मन भवन । लखी तीरथ हरिद्वार सुहावन ॥

तीरथ राज प्रयाग अक्षैवेता । धरयो मातु पुनि काशी करवत ॥
धनी धनी सुरसरि स्वर्ग की सीधी । तरनी अमिता पितु पड़ पिरही ॥

भागीरथी ताप कियो उपारा । दियो ब्रह्म तव सुरसरि धारा ॥
जब जग जननी चल्यो हहराई । शम्भु जाता महं रह्यो समाई ॥

वर्षा पर्यंत गंगा महारानी । रहीं शम्भू के जाता भुलानी ॥
पुनि भागीरथी शम्भुहीं ध्यायो । तब इक बूंद जटा से पायो ॥

ताते मातु भें त्रय धारा । मृत्यु लोक, नाभा, अरु पातारा ॥
गई पाताल प्रभावती नामा । मन्दाकिनी गई गगन ललामा ॥

मृत्यु लोक जाह्नुवी सुहावनी । कलिमल हरनी अगम जग पावनि ॥
धनि मइया तब महिमा भारी । धर्म धुरी कलि कलुष कुठारी ॥

मातु प्रभवति धनि मंदाकिनी । धनि सुर सरित सकल भयनासिनी ॥
पन करत निर्मल गंगा जल । पावत मन इच्छित अनंत फल ॥

पुरव जन्म पुण्य जब जागत । तबहीं ध्यान गंगा महं लागत ॥
जई पगु सुरसरी हेतु उठावही । तई जगि अश्वमेघ फल पावहि ॥

महा पतित जिन कहू न तारे । तिन तारे इक नाम तिहारे ॥
शत योजन हूं से जो ध्यावहिं । निशचाई विष्णु लोक पद पावहीं ॥

नाम भजत अगणित अघ नाशै । विमल ज्ञान बल बुद्धि प्रकाशे ॥
जिमी धन मूल धर्म अरु दाना । धर्म मूल गंगाजल पाना ॥

तब गुन गुणन करत दुख भाजत । गृह गृह सम्पति सुमति विराजत ॥
गंगहि नेम सहित नित ध्यावत । दुर्जनहूं सज्जन पद पावत ॥

उद्दिहिन विद्या बल पावै । रोगी रोग मुक्त हवे जावै ॥
गंगा गंगा जो नर कहहीं । भूखा नंगा कभुहुह न रहहि ॥

निकसत ही मुख गंगा माई । श्रवण दाबी यम चलहिं पराई ॥
महं अधिन अधमन कहं तारे । भए नरका के बंद किवारें ॥

जो नर जपी गंग शत नामा । सकल सिद्धि पूरण ह्वै कामा ॥
सब सुख भोग परम पद पावहीं । आवागमन रहित ह्वै जावहीं ॥

धनि मइया सुरसरि सुख दैनि । धनि धनि तीरथ राज त्रिवेणी ॥
ककरा ग्राम ऋषि दुर्वासा । सुन्दरदास गंगा कर दासा ॥

जो यह पढ़े गंगा चालीसा । मिली भक्ति अविरल वागीसा ॥

॥ दोहा ॥

नित नए सुख सम्पति लहैं । धरें गंगा का ध्यान ।
अंत समाई सुर पुर बसल । सदर बैठी विमान ॥
संवत भुत नभिदशी । राम जन्म दिन चैत्र ।
पूरण चालीसा किया । हरी भक्तन हित नेत्र ॥

॥ इति गंगा चालीसा सम्पूर्णम् ॥